History

Lecture No - 35

by

Dr. Komal (Guest Professor)
SNSRKS College

B.A. Part - 2nd

Paper - 3rd

तुगलक वंश (1320-1351)

(फिरोज शाह तुगलक)

Scanned with CamScanner

Q:- फिरोज शाह तुगलक की उपलब्धियों का वर्णन करें:-

Ans:- फिरोज सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक के छोटे भाई रज्जब का पुत्र था। उसका जन्म 1309 ई० में हुआ। फिरोज की शिक्षा का अच्छा प्रबंध किया गया परंतु संभवतः वह योग्य न हो सका। उसने अपने जीवन में न किसी सफल सैनिक अभियान में भाग लिया और ना ही उसने अच्छे शासन प्रबंध की योग्यता का परिचय दिया। परंतु मो० तुगलक अपने इस भाई से विशेष प्रेम करता था। संभवतः फिरोज को शासन में अच्छे पद प्राप्त होते रहे। जिस समय मुहम्मद तुगलक की मृत्यु हुई उस अवसर पर फिरोज उसके साथ था। सरदारों के कहने से 23 मार्च 1351 ई० में फिरोज सिंहासन पर बैठना स्वीकार कर लिया। और सुल्तान बना।

सबसे पहले फिरोज ने आंतरिक समय में शासन अव्यवस्थित हो गया था, नागरिकों में तीव्र संतोष था। अधिकांश मुस्लिम वर्ग सुल्तान की धार्मिक नीति और व्यवहार से उसके विरोध में गया और सबसे बड़ी समस्या राज्य की गिरती हुई आर्थिक स्थिति थी।

फिरोज का लक्ष्य इस स्थिति को सुधारने का रहा जो सुबे दिल्ली की अधीनता से मुक्त हो गये थे। उन अधीनता से मुक्त लोगो को फिर से अधीन बनाने की चेष्ठा थी और ना ही योग्यता। इस कारण राज्य की जो भी सिमायें रह गयी थी उसकी सुरक्षा करना, राज्य के नागरिकों में संतोष उत्पन्न करना के लिये तथा राज्य की भलायी के लिये आर्थिक सम्पन्नता का प्रयत्न करना, फिरोज के प्रमुख उद्देश्य रहे। फिरोज ने इन कार्यों में सफलता भी प्राप्त की।

Scanned with CamScanner

इस कारण वह लोकप्रिय हुये। फिरोज ने उदारता और सभी सरदारों को प्रसन्न करने की नीति से अपना शासन प्रारंभ किया। शाह-वंश के सभी व्यक्तियों को सुरक्षा का आश्वासन दिया। राज्य के ~~कार्य~~ कर्ज को चुका दिया। वजीर-ए-ख्वाजा-जहां ने अपने पक्ष को दृढ ~~करने~~ के लिये जिस सम्पत्ति को विभिन्न व्यक्तियों को दे दिया। उसे उनसे छीनने का प्रयास नहीं किया और इस्लामी कानूनों के अनुसार शासन करने का आश्वासन दिया।

1. **राजस्व व्यवस्था :-**

फिरोज ने इस्लामी कानून द्वारा स्वीकृत केवल चार कर लगाये (i) खराज - (लगान)
(ii) खम्स - (लूट में लूट का 1/5 भाग)
(iii) जजिया (हिन्दुओं पर धार्मिक कर)

Date: / /

इसके अतिरिक्त उलेमा वर्ग की स्वीकृति के पश्चात सिंचाई कर भी लगाया। उन किसानों को सिंचाई के लिये नहरों का पानी प्रयोग में लाते थे तथा अपनी पैदावार का 1/10 भाग सरकार को दिया जाता था।

२. सिंचाई व्यवस्था :-

सिंचाई की सुविधा के लिये फिरोज ने पाँच बड़ी नहरों का निर्माण कराया। इसमें से एक 150 मील लम्बी नहर यमुना नदी से हिसार तक बनायी गई थी। फिरोज ने सिंचाई यात्रियों की सुविधा के लिये 150 कुयें खुदवाये। फरिश्ता के अनुसार फिरोज ने सिंचाई की सुविधा के लिये विभिन्न नदियों पर 50 बांध और 30 झील अथवा जल को संग्रह करने के लिये तालाबों का निर्माण कराया था।

3. नहर और सार्वजनिक निर्माण कार्य :-

कहा जाता है कि फिरोज ने 300 नवीन नगरों का निर्माण कराया। इनमें संभवतः वे गाव भी सम्मिलित थे जो पहले उजड़ गये थे। परंतु फिरोज के समय में कृषि की सुविधा के कारण पुनः बस गये थे। उसके द्वारा बसाये गये नगरों में फतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर, मीर्जापुर जौनपुर, और फिरोजबाद प्रमुख थे।

4. परोपकार के कार्य :-

फिरोज मुसलमान संतों और धार्मिक व्यक्तियों को जागीरें व सम्पत्ति दान करता था। उसने एक रोजगार दफ्तर स्थापित किया था जो बेकार व्यक्तियों को कार्य दिलाता था अथवा उन्हें आर्थिक सहायता देता था। उसने एक विभाग दीवान-ए-खैरात स्थापित किया था जो मुसलमानों के लड़कियों के विवाह की व्यवस्था करता

5. **न्याय :-** फिरोज तुलगक की न्याय व्यवस्था इस्लाम के कानूनों पर आधारित थी। काजियों को उसने पुनः उनके विशेषाधिकार वापस कर दिये। स्वयं फिरोज भी न्याय करता था और वह कठोर दण्ड नहीं देता था।

6. **शिक्षा -** फिरोज स्वयं विद्वान था और विद्वानों का सम्मान करता था। जियाउद्दीन बरनी और शम्से शिराज अफीफ ने उनसे संरक्षण प्राप्त किया।

7. **दास :-** फिरोज को दासों का बहुत शौक था और उसके दासों की संख्या 18,000 तक पहुंच गई थी। उनकी देखभाल के लिये एक पृथक विभाग और एक पृथक अधिकारी की युक्ति की।

निष्कर्ष :- उपरोक्त तथ्यों से अध्ययन से स्पष्ट होता है कि फिरोज अपनी बहुसंख्यक हिंदु प्रजा के प्रति अत्यधिक कठोर रहा। उसने इस्लाम के प्रचार को

Scanned with CamScanner